वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 70	Year 7	Volume 8	April 2018 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

वैदिक कर्मफल व्यवस्था

सुख दुख का कारण मनुष्य के कर्म (काम या कार्य) हैं, ग्रह नहीं। मनुष्य जैसा काम करता है वैसा ही फल पाता है। ऐसा काम जिससे किसी का भला हुआ हो उसके बदले में ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होता है और ऐसा काम जिससे किसी का बुरा हुआ हो उसके बदले में मनुष्य को दुख मिलता है। ईश्वर पूर्ण रूप से न्यायकारी है। वह किसी की सिफारिश नहीं मानता। वह रिश्वत नहीं लेता। उसका कोई एजेंट या पीर, पैगम्बर या अवतार नहीं है।

अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कामों का फल अलग अलग भोगना पड़ता है। वे एक दूसरे को काटकर बराबर नहीं करते। अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कामों का अलग अलग हिसाब रहता है। ऐसा नहीं है कि एक अच्छा काम कर दिया और एक उतना ही बुरा काम कर दिया ओर वे बराबर होकर कट गए और हमें कोई फल न मिले। दोनों का अलग अलग फल भोगना पड़ता है। अच्छे और बुरे कामों के फलस्वरूप सुख और दुख साथ साथ भी चल सकते हैं। कुछ अच्छे कामों का फल हम भोग रहे हैं, साथ ही कुछ बुरे कार्यों का फल भी भोग रहे हैं।

ऐसे कर्म करने के बाद यह सोचना कि हमारा भला होगा बहुत ही बड़ी मूर्खता है पर मूर्ख बनाना में हमारे धर्म गुरू सब से आगे है।

मनुष्य जन्म में किए कर्मों के अनुसार ही आगे का जन्म मिलता है। अगर बुरे काम की बजाए अच्छे काम ज्यादा हों तो अगला जन्म मनुष्य का ही मिलता है। अगर बुरे काम ज्यादा हों तो अगला जन्म कर्मों के अनुसार पशु, पक्षी, कीड़ा, मकौड़ा आदि कुछ भी हो सकता है। यह बात सही नहीं है कि चौरासी लाख योनियों में से होकर ही मनुष्य जन्म फिर से मिलता है। हमारे सामने ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जहां बच्चों को अपने

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

पूर्व के जन्म का ज्ञान है और वे पूर्व जन्म में भी मनुष्य योनि में ही थे।

भाग्य या प्रारब्ध क्या है। मनुष्य जो भी अच्छा या बुरा काम करता है उसके बदले में उसके अनुसार उसे जो फल मिलता है वही उसका भाग्य है। इस प्रकार अपना भाग्य मनुष्य खुद बनाता है, कोई और नहीं। कोई भी किसी दूसरे का भाग्य न बना सकता है और न ही बिगाड़ सकता है। किसान ने खेती करके जो फसल घर में लाकर रखली वह उसका भाग्य है, उसकी अपनी मेहनत का फल।

किसी भी अच्छे या बुरे काम का फल शासन-प्रशासन भी दे सकता है। अगर शासन-प्रशासन न दे तो ईश्वर तो देता ही है। कोई भी कर्म बिना फल के नहीं रहता।

जैसे माता पिता अपनी सन्तानों को बुरे कार्यों से हटाकर अच्छे कामों में लगाने की कोशिश करते हैं वैसे ही ईश्वर भी करता है। जब मनुष्य कोई बुरा काम करने लगता है तब उसे अन्दर से भय, शंका, लज्जा महसूस होती है और जब वह कोई अच्छा काम करने लगता है उसे आनन्द, उत्साह, अभय, निशंका महसूस होती है। ये दोनों प्रकार की भावनाएं ईश्वर की प्रेरणा होती हैं।

मनुष्य कुकर्म क्यों करता है। अविद्या अर्थात मान लेना कि कुकर्म के फल से बचने का उपाय कर लेंगे तथा राग, द्वेष और लालच के कारण ही मनुष्य कुकर्म कर बैठता है।

अथर्ववेद (12-3-48) - कर्म का फल करने वाले को ही मिलता है। इसमें किसी और का सहारा नहीं होता, न मित्रों का साथ मिलता है। कर्म फल प्राप्ति में कमी या अधिकता नहीं होती। जिसने जैसा कर्म किया उसको वैसा ही और उतना ही फल मिलता है।

महाभारत में युद्ध की समाप्ति पर गन्धारी श्री कृष्ण से कहती है - निश्चय ही पूर्व जन्म में मैंने पाप कर्म किए हैं जो मैं अपने पुत्रों, पौत्रों और भाईयों को मरा हुआ देख रही हूँ।

महाभारत में ही शान्ति पर्व में कहा गया है - जैसे बछड़ा हजारों गऊओं के बीच में अपनी माँ के पास ही जाता है ऐसे ही कर्म फल कर्म के करने वाले के पास ही जाता है।

मनुस्मृति (4-240) - जीव अकेला ही जन्म और मरण को प्राप्त होता है। अकेला ही अच्छे कर्मों का फल सुख और बुरे कामों की फल दुख के रूप में भोगता है।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (प्रकृति 37-16) - करोड़ों कल्प बीत जाने पर भी बिना कर्म फल को भोगे उनसे छुटकारा नहीं मिल सकता।

चाणक्य नीति - किए हुए अच्छे और बुरे कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

गीता (5-15) - हमारे सुखों और दुखों के लिए परमात्मा उत्तरदायी नहीं है, बल्कि हमारे अच्छे और बुरे कर्म उत्तरदायी हैं। अज्ञानता के कारण हम अपने सुख दुख के लिए परमात्मा को उत्तरदायी ठहराते हैं, जबकि वह न हमारे पापों के लिए जिम्मेदार है और न ही पुण्यों के लिए जिम्मेदार है।

वाल्मीकि रामायण (युद्ध काण्ड 63-22) - रावण के मारे जाने के बाद जब हनुमान लंका में सीता को राम की विजय का समाचार सुनाने गए तब सीता ने हनुमान से कहा - मैंने यह सब दुख पूर्व जन्म में किए हुए कामों के कारण ही पाया है क्योंकि अपना किया हुआ ही भोगा जाता है।

वाल्मीकि रामायण (अरण्य काण्ड 35-17,18,19,20) - सीताहरण के पश्चात श्री राम सीता के वियोग में विलाप करते हुए कहते हैं - हे लक्ष्मण! मैं समझता हूँ इस सारी भूमि पर मेरे समान बुरे काम करने वाला पापी पुरुष और कोई नहीं है क्योंकि एक के पश्चात एक दुखों की परस्परा मेरे हृदय और मन को चीर रही है। पूर्व जन्म में निश्चय ही मैंने एक के पश्चात एक बहुत से पाप किए हैं। उन्हीं पापों का फल आज मुझे मिल रहा है। राज्य हाथ से छिन गया, अपने लोगों से वियोग हो गया, पिता जी परलोक सिधार गए, माता जी से बिछोड़ा हो गया। इन घटनाओं को याद करके मेरा हृदय शोक से भर जाता है। है लक्ष्मण, ये सारे दुख इस रमणीक वन में आने पर शान्त हो गए थे। परन्तु आज सीता के वियोग से वे सभी भूले हुए दुख उसी प्रकार फिर से ताजा हो गए हैं जैसे लकड़ी डालने से आग जल उठती है।

पश्चाताप (मनुस्मृति 11-230) - पाप कर्म होने पर उस पर पश्चाताप करके मनुष्य उस पाप भावना से छूट

जाता है। फिर वह पाप कर्म नहीं करता। यही पश्चाताप का फल है। जो कर चुका उसका फल तो भोगना ही पड़ेगा। किए कर्म के फल से बचने का शास्त्रों में कहीं कोई उपाय नहीं बताया। पाप का फल अवश्य मिलेगा यह सोचकर मनुष्य को पाप कर्म नहीं करना चाहिए।

कुकर्म से बचने के उपाय - अपने आप को ईश्वर के साथ जोड़ने से मनुष्य पाप कर्म से बच सकता है। यह जानकर कि ईश्वर हर समय मेरे साथ है, मेरे सभी कामों को देखता है तथा उसके अनुसार मुझे फल भी देता है मनुष्य दुष्कर्म से बच सकता है।

महाभारत - धर्म का सर्वस्व जानना चाहते हो तो सुनो। दूसरों का जो व्यवहार आपको अपने प्रतिकूल (विरुद्ध) लगता है अर्थात दूसरों का जो व्यवहार आपको पसन्द नहीं वैसा व्यवहार आप दूसरों के साथ मत करो।

जैसे अग्नि अपने पास आई लकड़ी को जला देती है ऐसे ही वेद का ज्ञान मनुष्य में पाप की भावना को जला देता है अर्थात वेद के स्वाध्याय से मनुष्य में पापकर्म करने की भावना समाप्त हो जाती है।

यजुर्वेद (40,3) - जो मनुष्य अपनी आत्मा का हनन करते हैं अर्थात मन में और जानते हैं, वाणी से और बोलते हैं और करते कुछ ओर हैं, वे ही मनुष्य असुर (दैत्य, राक्षस, पिशाच आदि) हैं। वे कभी भी आनन्द को प्राप्त नहीं करते। जो आत्मा, मन, वाणी और कर्म से कपट रहित एक सा आचरण करते हैं वे ही देवता हैं, वे इस लोक और परलोक में सुख भोगते हैं।

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयानः। - सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं। सत्य पर चलकर ही मनुष्य देवता बनता है। ऋषि लोग सत्य पर चलकर ही परमात्मा को पाकर आनन्द प्राप्त करते हैं।

ईश्वर की न्याय व्यवस्था में जो किसी का जितना भला करेगा उसको उतना ही सुख मिलेगा और जितना किसी का बुरा करेगा उतना ही उसे दुख मिलेगा। इस प्रकार सत्य और पक्षपात रहित न्याय का आचरण तथा परोपकार के कार्य ही सुख रूप फल देने वाले हैं।

कृष्ण चन्द्र गर्ग
831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
दूरभाष : 0172-4010679

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

अध्यात्मिक होना क्या है

डा महेश पोरवाल

मैने फरवरी मास के अंक में आपका इस विषय पर लेख पढ़ा बहुत अच्छा लगा। मैं इसी विषय को आगे बढ़ा रहा हूं।

हम में अधिक लोगों का यह मानना है कि अध्यात्मिकता का सम्बन्ध किसी सार्म्पदाय से है जो कि ठीक नहीं। हर सार्म्पदाय में अधिक बातें मानविय गुणों और कर्तव्यों से जुड़ी है उन्ही ठीक बातों को मानते हुये, चाहे वह हिन्दू है या इसलाम है या फिर कोई दूसरा, हम अध्यात्मिकवाद की और आ सकते हैं परन्तु इस से अधिक कुछ नहीं। मैने आर्य समाज के ही बहुत सन्यासी देखे है जो कि जीवन के आखरी वर्षा मे आर्य समाजी कर्मकाण्ड से दूर ,पूरी तरह अलग हो कर अध्यात्मिक हो गये और केवल मानवता की ही बात करने लगे। और कुछ ऐसे भी देखे जिन से अध्यात्मिकता कोसों दूर रही कारण उन्होने अच्छे गुणों को धारण करने के स्थान पर नाम, शोहरत और पैसा कमाने में ही ध्यान दिया। दुनिया के हर सार्म्पदाय में कर्मकाण्ड भी है और अध्यात्मवाद भी। कर्मकाण्ड का पालन करना बहुत आसान है परन्तु अध्यात्मिक होना उतना ही मुश्किल क्योंकि उसके लिये त्याग और तप चाहिये जिसकी कर्मकाण्ड में कोई आवश्यकता नहीं। मन आपका दिल्ली शहर में घूम रह है परन्तु हवन आप फिर भी कर रहे हो आहुतियां भी दे रहे हो, जैसा कि अक्सर सभी के साथ होता है। पडित जी हवन करवा रहे थे, मोवाईल पर घंटी बजी, जैसे ही मोवाईल पर बात खत्म हुइ आगे मन्त्र पढ़ना शुरू कर दिया , चाहे मन अभी मोवाईल में की बात से घिरा हुआ है। कहने का अर्थ है, कर्मकाण्ड सब से आसान है, आम व्यक्ति के लिये तो धार्मिक होने की निशानी भी है परन्तु अध्यात्मिक बनना इतना आसान नहीं है।

अध्यात्मिकता तो तप, त्याग, सादगी, घृणा, ईर्ष्या और बैर की भावना से उपर उठना है। चाहे आपके पास सब सुख आराम के साधन भी हैं फिर भी उनका प्रयोग न करते हुये सादगी का जीवन काटना, जो अपने पास है उसे ईश्वर का दिया समझना और कोई उपयुकत अवसर आये तो किसी जरूरत मन्द को दे देना अध्यात्मिक होने की निशानी है। परन्तु सब से बड़ा गुण है मन की पवित्रता और लोभ, मोह से सवतन्त्र हो जाना। दूसरे में अपने आप को देखना और करूणा की भावना होना। दूसरों के लिये सिंफ प्यार की भावना होना। वह जिसमें सिर्फ देने का ही मन करे न कि दूसरों से कुछ प्राप्त करने का। अध्यात्मिक होना क्या है इसे समझने के लिये यह कहानी पढ़े।

एक बार एक व्यक्ति महात्मा के पास नये ताजे अंगूर लेकर पहुंचा और बोला––––महात्मा मैं अपने बाग के सब से अच्छे अंगूर आपके लिये ले कर आया हूं। महात्मा वहुत खुश हुये और बोले–– ऐसी बात है तो इन्हे मैं अपने गुरू के लिये ले जाता हूं, वह इन्हे खा कर बहूत खुश होंगे इस से मुझे भी वहुत प्रसन्नता होगी। वह व्यक्ति बोला–––पर महात्मन यह तो मैं आप के लिये ले कर आया हूं। आप मेरा इतना ख्याल रखतें हैं। जब मेरी फसल खराब हो गई थी तो आपने मेरी कितनी सहायता की थी। कितनी बार जब मेरे घर में खाने की भी मुश्किल थी तो अनाज दिया। मेरा मन कृतज्ञता से भरा हुआ है। मैं चाहता हूं कि यह अंगूर आप ही खायें।

बेटा, अगर मैं आप के लिये कुछ कर भी सका तो यह शिक्षा मुझे मेरे गुरू ने ही दी। अगर मैं उनके सम्पर्क में न आता तो शायद यह सब न करता। इसलिये यह अंगूर मैं अपने गुरू को ही दूंगा।

महात्मा अंगूर लेकर अपने गुरू के पास पहुंचे। गुरू ने देखे तो बहुत खुश हुये पर तभी सपाट से बोले। तुम ने बहुत अच्छा किया जो यह अंगूर ले आये। हमारे आश्रम में एक व्यक्ति कई दिनो से रोगी है, उसके लिये यह अंगूर बहुत लाभप्रद होंगे। महात्मा और उनके गुरू अंगूर लेकर उस रोगी के कमरे में पहुंच गये। रोगी को जब मालुम हुआ कि उसके लिये इतने रसेदार अंगूर ले कर आये हैं तो उसका मन भर आया और

बोला–––आप मेरा इतना ध्यान रखते है, मेरे पास इसको बयान करने के लिये शब्द भी नहीं। पर मेरी यह ईच्छा है कि यह अंगूर मैं उस सेवक को दूं जो अपनी परवाह किये बगैर दिन रात मेंरी सेवा करता है, मुझे शीघ्र ठीक करने के लिये पोष्टिक आहार खिलाता है। महात्मा और उनके गुरू अंगूर लेकर उस रोगी के सेवक के पास पहुंचे और अंगूर उसको देते हुये उस रोगी की इच्छा उसको बताई। सेवक गुरू के चरणों में गिर पड़ा––––हे गुरू देव मुझे तो यह भी याद नहीं मैं कब और कैसे इस आश्रम में आया। आपने सेवा करने का सबक सिखाया तो इतना प्यार पा रहां हूं। मैं चाहता हूं यह अंगूर आप खायें।

गुरू देव की आंखों में अश्रू वह रहे थे। उन्होने कभी न सोचा था कि उनका आश्रम देवताओं का वास बन जायेगा जहां हर कोई अच्छी वस्तु पहले दूसरे को ही देना चाहता हो। गुरू देव ने सेवक को कहा अंगूर सब में बांट दो। यह है अध्यात्मिक होना

अध्यात्मिक व्यक्ति, ईश्वरीय गुणों से भरपूर होते है। वे कुछ भी लेने की बजाये दूसरों को देना चाहतें है। कृतज्ञता उनके अन्दर वास करती है। वे सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ मान कर ही चलते हैं।

*****

No Bargain is better than an Act of Philanthropy

Dr O.P. Setia

Kalu Mehta, father of Nanak, opened a small shop for his son in Talwandi (Lahore). He gave some money to his son and said, "I am sending you alone for the first time to the Market. Return home after striking a good bargain."

From the very childhood, Nanak was engrossed in chanting the sweet prayers of Almighty God. He observed God in hungry, harassed and aggrieved people. When he had covered some distance from Talwandi, he met some Sadhus (Saints). One Saint said, "Son, we are hungry for the past many days. Give us some food to eat so that we can fill our belly."

Nanak spent all the money for providing food to the Sadhus. He sat with them for some time and had discussions about God and returned home empty handed. When his father Kalu Mehta found that Nanak had returned empty handed, he asked him angrily, "I had sent you to bring material, how have you returned empty handed." Nanak replied humbly, "Father you had advised to strike a good bargain. What better bargain can be there than providing food to the hungry and distraught Sadhus and satisfying their hunger? So I spent those rupees for such a bargain that will benefit present life as well as the life after death." Hearing Nanak's reply, father Kalu Mehta realized that his son was not an ordinary man. The Great Guru Nanak later founded the Sikh religion.

Moral: A person who serves food to the hungry, really serves God.

D.Sc. (Medicina Alternativa), RMP (HomoeopathyHouse No. 464,
Sector 32-A, Chandigarh-160030, India
Mobile no : +919872811464 Land line no. : 0172-2660466

It is worth telling our valued readers that Dr Setia is spiritual in its real sense. Though he is already 78 but keeps himself busy in the acts of selfless service. "Do good to others" is the motto of his life as I could see from own iteractions. Second, he keeps on thanking Almighty for all his possessions. Daily attends to many charitable dispensaries, in and around Sector-32.

He has tips for good health and can be contacted on above telephone numbers. He is very agile and healthy for his age so his tips have greater significance than coming from likes of me who themselves have many health issues.

May God give him long life and continued good health!

विचारों को फिलटर (Filter) करना सीखे

भारतेन्दु सूद

समाज तभी तक जीवित रहतें हें जब वे समय के साथ चलते हुये लोगों की समस्याओं का समाधान रखते हैं। दूसरा समाज भवनों से नहीं मनुष्यों के संगठन से बनते हैं। संगठन है और भवन नहीं , काम चल जायेगा परन्तु भवन तो बहुत बड़े है और संगठन नहीं तो सिमिट जायेगा। इसलिये समाज में ऐसा महौल बनाना बहुत आवश्यक है कि लोग समाज से दूर न जायें बल्कि आयें।

मुझे कभी कभी आर्य समाज सैक्टर 22 जाने का अवसर मिलता है। वहां पर नये प्रधान श्री अशोक जग्गा बहुत विद्वान व प्रतिष्ठित वकील है। उनकी विद्वता इसी बात से पता लग जायेगी कि उपदेश के बाद अक्सर वह जो 5 मिन्ट के लिये बोलते हैं वह उस उपदेशक के 40 मिन्ट के भाषण से कही अच्छा लगता है। यह मेरी राय ही नहीं , मेरी बेटी व पत्नि भी यही कहती है। जब ऐसे व्यक्ति के हाथ में कमान होती है तो कार्यशैली में फर्क पढ़ता है। उनकी कोशिश रहती है कि सामयिक विषयों पर भी बात हो। इसी दिशा में उन्होने एक योग्य डाक्टर को बुलाया था। मैं भी सुन रहा था। बात खाने में प्राटीन की हुई तो उन महानुभाव ने जहां दूसरे पदार्थो का नाम लिया वहां मछली, फिश का भी जिकर किया कि इस में भी प्रोटीन काफी मात्रा में होते हैं। जो कि एक सच्चाई हैं। परन्तु यह भी सच्चाई है कि उन महोदय ने यह नहीं कहा कि आप फिश खायें। उन्होने और भी पदार्थ बताये जो कि शाकाहारि व्यक्ति खा सकता है।

परन्तु कुछ व्यक्ति जिनका उदेश्य ही अच्छे व्यक्तियों को काम न करने देना होता है, हर बात का बबाल खड़ा कर देते हैं। हमारे आर्य समाजों में ऐसे बवाल खड़े करने वालों की कमी नहीं। वे प्रधान जी को यह कह कर तूं तूं मैं में करने लगे कि आपने ऐसा व्यक्ति क्यों बुलाया जिसने की आर्य समाज में फिश का नाम लिया। आर्य समाज में अगर फिश वर्जित है तो असभ्य वर्ताव भी। मेरा कहना यही है कि उस डाक्टर ने यह तो नहीं कहा कि आप फिश खायें। उस ने तो इतना ही कहा कि प्रोटीन की पूर्ती किन पदार्थो से हो सकती है। उसने बहुत सी दूसरी अच्छी बाते कही जो कि स्वास्थय के लिये उपयोगी हैं, आप उन्हीं को ग्रहण करें।

हम जितना जोर नुक्स निकालने में लगाते हैं या लड़ने मे समय शक्ति पैसा खर्च करते है, उसे यदि सेवा भाव में लगायें, विनम्रता से पेश आयें, समाज का पद सेवा के लिये ले न कि अपनी रियासत बनाने के लिये, तो आपके भवन खाली नहीं रहेंगे। विद्वान की परिभाषा को बदलें। हमारे आर्य समाजों में विद्वान उसी को कहा जाता है तो कि सस्कृत के मन्त्र जानता हो, बाकी उसका ज्ञान व चाल चलन कैसा भी हो। अब अच्छी सुरीली आवाज वाले भी इस लिस्ट में आ गये है। विद्वान तो हर क्षेत्र में होते हैं , आप उन्हे अवसर तो दे। जब आप उन्हें बुलायेंगे, तो आपके खाली हाल स्वयं भर जायेंगे। हमारे 32 सैक्टर आर्य समाज के प्रधान श्री विजय मेहन जी हैं । एक बार आधा घंटा उनसे बात करने का अवसर मिला तो पता लगा कि वे बहुत विद्वान है व उंचे पदों पर कार्य करते रहें हैं । मैन मेहन साहब को कहा कि आप बाहर से जो उपदेशक बुलाते हो तो कभी आप भी बोला करो , लोगों का बहुत लाभ होगा। मेहन साहब झट से बोले——सूद जी मुझ संस्कृत नहीं आती। यह है हमारी आर्य समाजों का हाल। इसे सुधारने की आवश्यकता है। आप कभी किसी उत्सव पर बुलाये व्यक्तियों के नाम देखें, सभी शास्त्री वेदालंकार ही नजर आयेंग। सिर्फ संस्कुत जानने वाले या स्कूलों कालजों के अध्यापक ही विद्वान नहीं होते, विद्वान तो हर क्षे़त्र मे होते है। सभी को स्थान दें और सभी कों सुने।

समाज में रहते हुये दूसरों को सुने , जो बात अच्छी लगती है ग्रहण करें उसका धन्याबाद करें जो मन को ठीक नहीं लगती उसे फिलटर आउट कर दें। यही प्यार से रहने का ढंग है ओर तभी समाज पनपते है ।

*****

Who is Sage?

Bhartendu Sood

A sage is the salt which preserves society from decay and degeneration. A saint is God like himself. The Upanishads declare: "He who knows God becomes like God, i.e. attains godly qualities and we start calling him *Bhagwan*." The glow of a sage separates him from an ordinary mortal. The sage is very silent and speaks only a few words. These words produce a tremendous impression. They give new life and joy to all who understand him and his message. In his presence alone the doubts of the aspirants are cleared, though he remains mute. Company of the Sage helps in attaining the purity of heart.

Love of God is obtained principally and undoubtedly by the grace of saints, or in other words, from the touch of divine compassion and companionship of saints one starts getting closer to God.

Lord Krishna declares in the *Bhagavad Gita*, "The same am I to all beings; to me there is none hateful or dear; but those who worship me with devotion are in me and I am also in them." **Though the rays of the sun fall equally on one and all, it is the face of the diamond that dazzles more than anything else.** Although God is equal for one and all, He manifests more vividly in the heart of a sage, which is made transparent by purity.

Mahatma Hansraj a sage in real sense

Where contact with a sage is not possible, one should try to be in contact with sublime books like the Vedas, Upanishads, the *Bhagavad Gita* or the *Ramayana*. Meditation on the lives of saints and study of their teachings is equal to holy company. One should try to engage in hearing-listening the glory of God. This also is satsang.

One should keep on reading the lives of great saints and sages and be inspired. Though dead but are more relevant today than ever before. More you read saints like Kabir, Guru Nanak, Maharishi Dayanand Saraswati, more you feel divined.

*****

तेज का असर!

श्री गुरु नानकदेव जी महाराज एक जंगल मे जा रहे थे। उस जंगल में सज्जन नाम का एक ठग रहता था। एक सराय उसने बना रखी थी। यात्री उस सराय में आकर ठहरते थे। सज्जन उनकी आवभगत करता, उनको खिलाता–पिलाता। रात के समय वे सो जाते तो उनकी गर्दन पर छुरी फेर देता, उनका सब–कुछ लूट लेता। गुरु महाराज भी उस सराय के पास पहुँचे। भाई बाला उनके साथ था। रात हो रही थी। गुरु जी ने कहा– ''बाला! आज रात हम इसी सराय में ठहरेंगे।'' ठहर गए दोनों। सज्जन ने उन्हें अच्छी तरह खिलाया–पिलाया। सोने को जगह बता दी। दिल–ही–दिल में सोचा कि ये दोनों धनाडय प्रतीत होते हैं। आज बहुत माल हाथ लगेगा

श्री गुरु नानकदेव जी महाराज पहले प्रभु के प्यार से भरी वाणी गाते रहे। फिर उसी प्यार में आखें मूँदकर अपने प्यारे प्रीतम के प्यार में मग्न हो गए। बाला सो गया। गुरु जी वैसे ही बैठे रहे। सज्जन ने उनकी ओर देखा तो उसके दिल मैं बैठा राक्षस काँप उठा। आत्मा रो उठी। दिल के अन्दर से किसी ने कहा–'इस ज्योति को देख भाग्यहीन! यह साधारण मनुष्य नहीं, यह तो कोई देवता है।' परन्तु मन के अन्दर बैठे राक्षस ने कहा–'कोई भी हो, तू ठग है, आगे बढ़ और अपना काम कर इसकी आँखें बन्द हैं। परन्तु गुरु जी महाराज की आँखें बन्द होने पर भी उनके मुख–मण्डल की आत्मिक ज्योति सज्जन को ऐसी मालूम ;प्रतीतद्ध हुई, जैसे उसे बाँधे लेती हो। उसका शरीर काँपने लगा, हाथ काँपने लगे, छुरी परे जा गिरी और वह गुरु महाराज के चरणों में गिरकर पुकार उठा–''मुझे बचाइए महाराज! मुझे बचाइए!'' गुरु जी ने आँखें खोलकर उसकी ओर देखा। उसकी कहानी सुनी। हँसते हुए बोले–''तू तो सज्जन है, फिर यह सब–कुछ कैसे करता रहा? अब जिस–जिसका जो कुछ छीना है वह सब दे, तभी तेरे मन को शान्ति मिलेगी।'' यह है तेज का प्रभाव

भगवान बुद्ध (जा रहे थे, एक नगर से एक और नगर को। रास्ते में एक जंगल पड़ता था। नगरवालों ने कहा– ''महाराज! इस जंगल में न जाइए। इसके अन्दर एक भयानक डाकू रहता है– अंगुलीमाल, जो यात्रियों का सब–कुछ लूटकर उन्हें कत्ल कर देता है। उनकी लाशों को हिंसक पशुओं के सामने फैंक देता है। हर लाश से एक अंगुली काटकर अपने गले में अपनी माला के अन्दर पिरो लेता है। बहुत भयानक है वह! आप जंगल के अन्दर जाने की बजाय इसका चक्कर काटकर दूसरे रास्ते से जाइए।'' भगवान् बुद्ध ने हँसते हुए कहा– ''ऐसा मनुष्य रहता है इस जंगल में, तब तो मुझे जंगल से ही जाना चाहिए।'' और चल पड़े आगे। जंगल के घने भाग में पहुँचे तो अंगुलीमाल ने उन्हें देखा। उसे आश्चर्य हुआ कि यह कौन व्यक्ति है जो इतनी निर्भयता से चला आता है? आगे बढ़कर उसने कहा, ''ठहरो!'' भगवान! (हँसते हुए खड़े हो गए) बोले–''तुम ही अंगुलीमाल हो? लोगों की अंगुलियाँ काटकर उनकी माला बनाकर पहनते हो?'' अंगुलीमाल ने गर्जकर कहा–हाँ! मैं ही अंगुलीमाल हूँ। जब तुमने मेरा नाम सुना और यह भी जाना कि मैं क्या करता हूँ, फिर इस जंगल में क्यों आ गए?'' भगवान बुद्ध ने मुस्कराते हुए कहा– ''तुम्हें देखने के लिए मेरे भाई! तुम्हें अपना प्यार देनेके लिए, आशीर्वाद देने के लिए।'' अंगुलीमाल आश्चर्य से बोला–परन्तु, मैं एक डाकू, कातिल, खूनी, राक्षस।'' भगवान् बुद्ध ने उसके पास जाकर मुस्कराते हुए कहा–''नहीं, तुम मनुष्य हो अपने–आप से भूले हुए, सच्चाई को भूले हुए। मैं गौतम बद्ध हूँ। आओ! मैं तुम्हें बताऊँगा कि सच्चाई क्या है।'' और वह अंगुलीमाल बच्चे की तरह रोता हुआ उनके चरणों में गिर पड़ा। सिसकता हुआ बोला, ''मुझे बचाओं भगवन्! मुझे बचाओं! यह है तेज का प्रभाव

*****

समस्या के मूल स्वरूप में लौटकर ही संभव है वास्तविक उपचार करना

सीताराम गुप्ता,

कहते हैं कि बच्चे के जन्म के समय असावधानीवश यदि माँ को कोई बीमारी हो जाए तो अगले बच्चे के जन्म के समय थोड़ी सावधानी बरती जाए तो वह बीमारी स्वतः ठीक हो जाती है। इसका तात्पर्य है कि प्रसव की बीमारी प्रसव में ही ठीक होती है। शादी–ब्याह अथवा अन्य अवसरों पर हुए झगड़े अथवा मनोमालिन्य अगले किसी ऐसे ही अवसर पर सुलझाना सरल होता है। कई बार अपराध की जाँच व न्यायालयों में अपराध सिद्ध करने के लिए भी इस प्रकार की मॉक एक्सर्साइज़ की जाती है जिसमें पूरे केस को करके दिखाया जाता है या उसका अभिनय किया जाता है जिससे घटनाक्रम पूरी तरह समझ में आ जाए और अपराध की असली स्थिति स्पष्ट हो सके।

एक बार किसी युवती की कई मंज़िला इमारत के ऊपर से गिरने से मृत्यु हो गई। ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे पता चल सके कि युवती ने आत्महत्या की है या दुर्घटनावश वह गिर गई अथवा उसकी हत्या करने के इरादे से उसे धक्का दे दिया गया। मृत्यु का वास्तविक कारण पता लगाना मुश्किल हो रहा था। अतः इसी आकार और वज़न की 'डमी' को उतनी ही ऊँचाई से विभिन्न कोणों से नीचे डालकर वास्तविकता का पता लगाने का प्रयास किया गया। इसे घटना या वारदात का रीकंस्ट्रक्शन कहा जाता है जो फॉरेंसिक थैनेटोलॉजी में अपराध या घटना का मूल कारण जानने की प्रक्रिया है। अर्थात् समस्या कोई भी हो उसको सुलझाने के लिए घटना के मूल स्वरूप या स्थिति में लौटना पड़ता है।

शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिए भी यही सब करना अनिवार्य है। व्याधि या रोग एक ग़लत विचार मात्र है और कुछ नहीं अतः जिस मनःस्थिति में ग़लत विचार ने जन्म लिया था उसी मनःस्थिति में पहुँचकर ग़लत विचार रूपी पोधे को जड़ से उखाड़ना पड़ता है। जैसे किसी पौधे को रोपने या बीज बोने के लिए मिट्टी की एक विशेष अवस्था अर्थात् नमी और पोलेपन की ज़रूरत होती है उसी तरह पौधे को समूल नष्ट करने या उखाड़ने के लिए भी बिलकुल उसी अवस्था की ज़रूरत होती है। ज़मीन ज़्यादा सख़्त और सूखी होने पर यदि पौधे को जड़ सहित उखाड़ना चाहेंगे तो पौधे का ऊपरी भाग तो टूटकर हाथ में आ जाएगा लेकिन जड़ वहीं रह जाएगी।

जब पौधे का ऊपरी भाग टूट जाता है लेकिन जड़ ज़मीन के अंदर रह जाती है तो यही जड़ बार–बार पल्लवित होकर वृक्ष बनती रहेगी। तेज़ आँधी आने पर भी पेड़ टूट कर गिर जाते है लेकिन जड़ सहित नहीं उखड़ते। हाँ बरसात के दिनों में जब लगातार बारिश और नमी के कारण ज़मीन नरम और पोली हो जाती है तब बड़े–बड़े वृक्ष भी हल्के से हवा के झोंके से समूल नष्ट हो जाते हैं। यही तथ्य व्याधियों के उन्मूलन में लागू होता है। बीमारियों को जड़ से समाप्त करना है या समस्याओं को समूल नष्ट करना है तो उसके लिए तह तक पहुँचना होगा और मन रूपी धरती को उसी अवस्था में लाना होगा जिस अवस्था में नकारात्मक या ग़लत विचार स्थापित होकर शारीरिक व्याधि के रूप में प्रकट हो गया था।

ग़लत विचार या मन की ग़लत

कंडीशनिंग के प्रमुख कारण :

नकारात्मक या ग़लत विचार अथवा ग़लत कंडी ानिंग ही हमारी व्याधियों के मूल में होते हैं। यदि हमारी सोच हमेशा ही नकारात्मक रहती है तो हमारे रोगग्रस्त होने की संभावना भी कई गुना बढ़ जाती है और रोग होने पर ठीक होने में भी देर लगती है। प्रश्न ये है कि नकारात्मक सोच शारीरिक अथवा मानसिक व्याधि में कैसे बदलती है? प्रायः जब हम खाली बैठे होते हैं तभी ज़्यादा सोचते हैं और सोचते–सोचते एकदम शांत अवस्था में चले जाते हैं, किसी एक विचार पर केन्द्रित हो जाते हैं। मन की ऐसी शांत–स्थिर अवस्था में जो चिंतन होता है वह बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि मन की इस अवस्था में जो विचार प्रभावी हो जाता है वही भौतिक जगत में वास्तविकता का रूप ले लेता है।

मन की ऐसी शांत–स्थिर अवस्था में अवस्था में यदि हमारा चिंतन नकारात्मक है तो वह घातक है क्योंकि उसी के कारण सारे विकार उत्पन्न होते हैं और इन्हीं मनोविकारों के लगातार प्रभाव से शरीर पर रोग उत्पन्न हो जाते हैं इसीलिए कहा जाता है कि नकारात्मक भावों या नकारात्मक दृष्टिकोण से बचो। सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण रखो। हमारा दृष्टिकोण ही हमारे चिंतन का आधार बनता है। जैसा दृष्टिकोण वैसा चिंतन और जैसा चिंतन या भाव वैसा शरीर या व्यक्तित्व। हमारे स्वास्थ्य और समृद्धि का स्वरूप सीधा हमारे मन के अनुरूप होता है। सुख–दुख, समृद्धि–अभाव, लाभ–हानि अथवा आरोग्य या बीमारी का सीधा संबंध हमारे मन से है। मन की कंडीशनिंग द्वारा ही इनका स्वरूप निर्धारित होता है तथा साथ ही मन की शक्ति द्वारा इनका सृजन भी।

आपके पास धन दौलत शोहरत सब कुछ है पर विचार अगर नकारात्मक है तो आप बहुत गलत कदम भी ले सकते है दिव्या भारती जैसे एक फिल्म ऐक्टर ने किया

ग़लत कंडीशनिंग से कैसे बचें?

कहावत है खाली मन शैतान का घर। यदि मन में कोई अच्छी कल्पना, विचार, भाव या इच्छा नहीं है तो कोई न कोई ग़लत विचार, भाव, इच्छा या कल्पना कहीं न कहीं से मन में घर कर जाएगी अतः मन को सदैव सकारात्मक विचारों से ओत–प्रोत रखो। लेकिन यदि किसी वजह से नकारात्मक चिंतन हावी हो गया है तो रोगमुक्त होने के लिए सबसे पहले इस नकारात्मकता अथवा रोग के भय को मन से निकालना होगा क्योंकि भय की समाप्ति ही वास्तविक उपचार है। इसके लिए मन की उसी शांत–स्थिर अवस्था में जाना होगा और विवेकपूर्वक अपने विचारों को ध्यानपूर्वक देखना, समझना और नियंत्रित करना होगा। जो ग़लत विचार हैं उनको हटाकर उचित विचार को स्थापित करना होगा। शांत–स्थिर अवस्था में जिसे ध्यानावस्था कहा जाता है पहुँचकर सही भाव को स्थायित्व देने का प्रयास करेंगे तो नकारात्मक या अनचाहे विचार स्वयं लुप्त हो जाएँगे।

इसके लिए ब्रेनवॉशिंग अनिवार्य है लेकिन सकारात्मक ब्रेनवॉशिंग। ब्रेनवॉशिंग क्या है? किसी विशिष्ट अतिवादी विचारधारा से प्रभावित करना। इसके लिए भी मन की कंडीशनिंग की जाती है। वर्तमान विचारों को क्षीण करके या हटाकर विशेष

विचारों से युक्त कर दिया जाता है। उग्रवादी भी इसी सिद्धांत को प्रयोग में लाते हैं। किसी संतुलित–सकारात्मक विचारधारा वाले व्यक्ति को शांत–स्थिर अवस्था में ले जाकर अपेक्षित ग़लत या अतिवादी विचार की कंडीशनिग कर देते हैं। एक हानिकारक विचार को स्थायी कर देते हैं। यह ध्यानावस्था का दुरुपयोग है। हमें ध्यानावस्था का अपने लाभ के लिए सदुपयाग करना है। ध्यानावस्था में सही विचारों की रीकंडीशनिंग ही रूपांतरण अथवा उपचार है। यही स्थायी सकारात्मक आंतरिक परिवर्तन भी है।

ध्यानावस्था और उपचार :

जैसे ही हम ध्यानावस्था में पहुँचते हैं हमारे शरीर में अनेक लाभदायक हार्मोंस उत्सर्जित होने प्रारंभ हो जाते हैं जो हमारी स्वाभाविक रोगोपचारक शक्ति का विकास करते हैं। जो लोग नियमित रूप से ध्यान करते हैं उन्हें व्याधियाँ नहीं घेरती हैं और रोग होने की अवस्था में वे अपेक्षाकृत शीघ्र स्वस्थ हो जाते हैं। ध्यान ही रोग अथवा समस्या का वास्तविक उपचार है क्योंकि ध्यानावस्था में ही रोग के मूल स्वरूप में लौटना संभव है। ध्यानावस्था में मन को प्रभावित कर जो उपचार किया जाता है वही वास्तविक उपचार है और इसे आत्मपरक उपचार या सब्जैक्टिव हीलिंग कहा गया है। जब रोग का उपचार दवाओं से किया जाता है तो वह बाह्य उपचार कहलाता है और इसे वस्तुपरक उपचार या ऑब्जैक्टिव हीलिंग कहते हैं। वस्तुपरक उपचार में रोग के लक्षण दब तो जाते हैं लेकिन अनुकूल परिस्थितियाँ पाते ही फिर उभर आते हैं। अतः आत्मपरक उपचार पर बल दिया गया है यही वास्तविक उपचार है। यह पूर्णतः एक मनोवैज्ञानिक उपचार पद्धति है। फिल्म भूल भुलैया में भी इसी उपचार पद्धति का सहारा लिया जाता है।

इसी प्रकार ऐतिहासिक भूलों को सुधारने के लिए भी इस विधि का सहारा लिया जाता है। पिछले दिनों यूरोप में वाटरलू की लड़ाई की 200वीं सालगिरह की जीवंत पुनरावृत्ति की गई जिसमें नेपोलियन को करारी हार का सामना करना पड़ा था। वस्तुतः इस पुनरावृत्ति का उद्देश्य हार–जीत का विश्लेषण करना नहीं अपितु युद्ध की निरर्थकता पर सार्थक संवाद प्रस्तुत कर विश्व को भविष्य में युद्ध से दूर रखना हो सकता है। बापू द्वारा 12 मार्च 1930 से लेकर 6 अप्रैल 1930 तक की ऐतिहासिक डांडी यात्रा की 75वीं सालगिरह की पुनरावृत्ति भी मार्च–अप्रैल 2005 की गई जिसमें देश के शीर्ष नेताओं ने भाग लिया। इससे पहले भी पचासवीं और साठवीं सालगिरहों पर डांडी मार्च का जीवंत आयोजन किया जा चुका है। ऐसी सभी घटनाओं की पुनरावृत्ति वास्तव में समस्याओं के मूल स्वरूप में पहुँचकर उसे समझने और ग़लतियों को फिर से न दोहराने अथवा ग़लत नीतियों के विरूद्ध निरंतर संघर्षरत रहने का संकल्प ही होता है।

किसी भी व्यक्ति के जन्मदिवस पर उसकी वर्षगाँठ मनाना हो अथवा किसी घटना की वर्षगाँठ मनाना हो उद्देश्य वही है। जन्मदिवस मनाने का अर्थ है हम उस व्यक्ति के सिद्धांतों को समझकर स्वीकार कर रहे हैं। गाँधीजी का जन्मदिवस मनाने का अर्थ है हम सत्य और अहिंसा का समर्थन करते हैं और इन्हें अपने जीवन में लागू करने के लिए कृतसंकल्प हैं। केवल 'रघुपति राघव राजा राम' या 'वैष्णव जन तो तेने कहिये' का आँख मूँद कर जाप करना मात्र आत्म–प्रवंचना है। जयंती मनाने का अर्थ है कि यदि घटना सकारात्मक है तो उससे पुनः प्रेरणा लेना और यदि घटना नकारात्मक है तो उससे बचने तथा ऐसी व्यवस्था करने का प्रयास करना है जिससे ऐसी परिस्थितियाँ पुनः उत्पन्न न हों। और इस सब के लिए अनिवार्य है घटना के मूल स्वरूप में लौटना। इसके बिना पूर्ण उपचार अथवा उद्दे य की पूर्ति संभव ही नहीं।

कई तरह का लेखन भी इसी श्रेणी में आता है। ऐतिहासिक घटनाओं की जीवंत पुनरावृत्ति अथवा जयंती मनाने की तरह घटनाओं का लेखन भी भूल सुधार या प्रेरणा ग्रहण करने के उद्देश्य से ही

किया जाता है। व्यक्तिगत रूप से भी व्यक्ति जब अपने विषय में लिखता है तो उसका उद्देश्य जीवन की वास्तविक स्थितियों का विश्लेषण कर सही को स्वीकार करना तथा ग़लत को अस्वीकार कर प्रायश्चित करना और इस तरह मन में जमा विकारों से मुक्त होना ही होता है। मनोचिकित्सक अपने रोगी को प्रायः अपनी समस्याओं को विस्तार से लिखने या सुनाने को कहते हैं। विस्तार से लिखना या सुनाना तभी संभव है जब हम अपने मन की गहराइयों में उतरकर देखते हैं। अतः किसी भी प्रकार के विकारों से मुक्ति के लिए घटना के मूल स्वरूप तक पहुँचने के लिए मन की गहरी परतों में झाँकना अनिवार्य है।

चर्च में जाने वाले लोग वहाँ अपने गुनाहों की स्वीकृति या कन्फेशन करते हैं। यह एक प्रकार से प्रायश्चित द्वारा विकारों से मुक्त होने का तरीक़ा ही है। काउंसलिंग में भी पीड़ित व्यक्ति अपने परामर्शदाता को अपने मन की हर एक बात बता देता है। इससे परामर्शदाता को समस्या के मूल तक पहुँचने में तो सहायता मिलती ही है साथ ही पीड़ित द्वारा अपने मन में दबे विचार या विकार उगल देने से बहुत राहत मिलती है। आधा उपचार तो यही हो जाता है। कहने का तात्पर्य ये है कि माध्यम या तरीका कोई भी हो समस्या के उपचार के लिए समस्या के मूल में पहुँचना अनिवार्य है।

किसी समस्या का मूल प्रसव में होता है तो किसी समस्या का मूल युवावस्था या किशोरावस्था में। अधिकांश समस्याओं का मूल भूतकाल में ही होता है अतः उसी कालखण्ड में पहुँचकर ही समस्या को समझा और सुलझाया जा सकता हैं। भौतिक रूप से बीते कालखण्ड में पहुँचना असंभव है अतः उस कालखण्ड की मानसिक यात्रा की जाती है। इसके लिए ''एज रिग्रेशन तकनीक'' का सहारा लिया जाता है। 'रीबर्थिंग प्रोसेस' हो या 'पास्ट लाइफ रिग्रेशन' अथवा 'प्रीवियस लाइफ रिग्रेशन' सबका उद्देश्य है पीछे लौटकर समस्या के मूल को खोजना और उसे ठीक करना। रोग की जड़ पर प्रहार कर उसे समूल नष्ट कर मूल स्वरूप में लौटना है। यही रूपांतरण है। निर्द्वन्द्व होकर जीवन जीने की कला है ये सारी प्रक्रिया।

कीचड़ और कमल

कहा जाता है कि कमल कीचड़ में ही खिलता है। कीचड़ या पंक में उगने या उत्पन्न होने अथवा खिलने के कारण ही उसे पंकज कहा गया है। लेकिन क्या कमल वास्तव में कीचड़ में ही उगता, उत्पन्न होता अथवा खिलता है? हाँ, लोग तो यही कहते हैं कि कमल कीचड़ में ही खिलता है। अब ये कीचड़ क्या है? कीचड़ मिट्टी और पानी का संयोग है। अब बतलाइए दुनिया का कौन सा पादप या पुश्प है जो मिट्टी और पानी के संयोग के बिना उगता या पल्लवित–पुश्पित होता है? इस धरती पर जितनी भी वनस्पतियाँ हैं सभी मिट्टी में उगती हैं। बीजों को अंकुरित होने व बढ़ने के लिए पानी की भी ज़रूरत पड़ती है। सूर्य की रो ानी व हवा में घुली कुछ गैसों की भी

ज़रूरत होती है। किसी पौधे को कम पानी चाहिए तो किसी को अधिक पानी चाहिए। मिट्टी भी अनेक प्रकार की होती हैं। मिट्टी की विविधता के कारण ही वनस्पति जगत में विविधता पाई जाती है। मृदा व जल के संयोग की विविधता के कारण भी वनस्पति जगत में विविधता उत्पन्न होती है।

कमल कीचड़ में ही क्यों जल में भी तो उगता व खिलता है। इसीलिए तो उसे जलज कहते हैं। जलज ही नहीं नीरज, वारिज और अंबुज भी कहते हैं जिससे सिद्ध होता है कि कमल जल में ही उगता है। रुके हुए पानी में। तालाब या सरोवर में। नदी या समुद्र में नहीं। कमल जल में उगता है इसके अनेक पर्यायवाची भाब्द उपलब्ध हैं जबकि कमल कीचड़ में उगता है इसका एक ही पर्यायवाची है। तालाब या सरोवर में जहाँ पानी होता है उसके तल में मिट्टी होती है। उसी मिट्टी में कमल के पौधे की जड़ें होती हैं। उसी के द्वारा वह मिट्टी से पोशण पाता है। यदि तालाब या सरोवर का तल पक्का हो तो उसमें कमल क्या कुछ भी नहीं उग सकता। उगने के लिए मिट्टी पहली भार्त है। जल में उत्पन्न होने और खिलने वाला कमल हो या दूसरे जलीय पुश्प वे सभी पानी के ऊपर खिलते हैं। यदि तालाब या सरोवर में जल की गहराई बहुत अधिक है तो कमल वहाँ नहीं उगते। कमल केवल उथले जल में ही खिलते हैं गहरे जल में नहीं। गहरी झीलों के उथले किनारों पर खिल सकते हैं बीच गहराई में नहीं।

कमल के विशय में अनेक भ्रांतियों से साहित्य भरा पड़ा है। कुछ कहते हैं और कुछ ने लिखा है कि मानसरोवर में कमल खिलते हैं। बहुत ऊँचाई पर कहाँ कमल खिलते हैं? जो झील अत्यधिक सर्दी के कारण साल के अधिकां ा महीनों में जमी ही रहती है उसमें कमल कैसे खिल सकते हैं? वास्तव में कमल इस महिमामंडन का कारण है इसे अति महत्त्व दिया जाना। और महत्त्व दिए जाने का कारण है कमल का सौंदर्य। कमल की मसृणता व गंध। लेकिन अनेकानेक ऐसे पुश्प हैं जो कमल से भी सुंदर और आकर्शक हैं। कमल को अधिक महत्त्व देने का कारण हमारी हज़ारों वर्शों की कंडी ानिंग मात्र है। कमल व दूसरे आकर्शक पुश्प ही नहीं हर पुश्प महत्त्वपूर्ण होता है चाहे वह कितना भी अनाकर्शक अथवा गंधहीन क्यों न हो। उसी से उसकी प्रजाति के पौधों का विकास संभव है। प्रकृति में जैव–विविधता अनिवार्य है। सभी पेड़–पौधे, वनस्पतियाँ, जीव–जंतु व भौगोलिक स्थितियाँ इसको बनाए रखने में सहयोग देती हैं। कमल महत्त्वपूर्ण नहीं है ये बात नहीं है कमल भी कम महत्त्वपूर्ण है लेकिन अन्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं।

ए.डी. 106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
मोबा0 नं. 09555622323
Email : srgupta54@yahoo.co.in

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

विद्या, ज्ञान से ही जीवन में जीने क आनन्द तथा परमानन्द और मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्तिन कर्म लिप्यते नरे।।

यजु. 80/2

कर्म करते हुए संसार में भोगों को भोगते हुए जीवन यापन करो क्योंकि शरीर मिला है। अतः कर्म करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है। लेकिन इस संसार में रहते हुए कार्य इस प्रकार करो, जिससे ये कर्म बन्धन के कारण न बनें अर्थात् आवागमन के चक्र से छुड़ाने वाले, मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने वाले हों।

क्या ऐसा संभव है?
हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों ने इस विषय में चिन्तन करके कहा–

विद्यया विन्दतेऽमृतम् ;केन.द्ध
विद्या से अर्थात् यथार्थ ज्ञान से अमृत की, मोक्ष की प्राप्ति होती है।

निरुक्तकार कहते है
'विद्यातः पुरुष विशेषो भवति' ;नि.सा विद्या या विमुक्तये
विद्या से मनुष्य श्रेष्ठ और मान्य बनता है।

महाभारतकार का वचन हैः–
'नास्ति विद्यासमं चक्षुः' ;महा. शा. पर्व
संसार में विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।

नीतिकारों के अनुसार–
'विद्या विहीनः पशुभिः समानः'।
विद्या से हीन मनुष्य पशु के समान होता है।

गीता का वचन हैः–
'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'।
ज्ञान के समान संसार में कुछ भी पवित्र नहीं है।

उपनिषद के ऋषि कहते हैं। –
ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'।
बिना ज्ञान के मुक्ति, सांसारिक बंधन से छुटकारा तथा आवागमन,जन्म–मृत्यु के बन्धन से मुक्ति नहीं हो सकती है। ऐसे शास्त्रों में अन्य अनेक वचन प्राप्त होते हैं। ये समस्त वचन स्पष्ट बोध देते हैं कि विद्या, ज्ञान से ही जीवन में जीने का आनन्द तथा परमानन्द और मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

*****

मेरिशस के पाठ्क ने हमारी पत्रिका को लेने के लिये 1000 रूपया भेजा

मेरिशस के एक पाठक श्री सुन्दर तिलक ने कहीं हमारी पत्रिका पढ़ी उसे बहुत अच्छी लगी। उसने फोन पर इसका गाहक बनने के लिये समपर्क किया। मैने डाक्खाने से पता कर के बताया कि यह व्यवहारिक नहीं है क्योंकि एक प्रति पर 70 रूप्ये का टिकट खर्च है। हम आपको इ मेल कर दिया करेंगे। महानुभाव का फिर फोन आया कि मुझे तो हारड कापी ही चाहिये ओर उसने हमारे एकाडंट में 1000 रूप्या भेज दिया।
हमें आपसे शेयर करने में प्रसन्नता है।

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।
जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

गाय पूजनिय क्यों ?

गाय उपकारी पशु ही नहीं, पूजनीय देवता भी है गाय के दूध के गुणों की तुलना अन्य किसी पशु से नहीं की जा सकती। गाय का दूध भी मां के दूध के समान गुणकारी व हितकर है। जो मनुष्य गोदुग्ध का सेवन अधिक करता है उसको अधिक अन्न की आवश्यकता नहीं होती।

इसी प्रकार से गोमूत्र भी एक महौषधि है। इससे कैंसर जैसे रोगों का सफल उपचार होता है। नेत्र ज्योति को बनाये रखने तथा नेत्र रोगों को दूर करने में भी यह रामबाण के समान है। त्वचा के रोगों में भी गोमूत्र से लाभ होता है। गोमूत्र कीटाणुनाशक होता है। इससे उदरस्थ कीड़े भी समाप्त हो जाते हैं। ऐसे और भी अनेक लाभ गोमूत्र से होते हैं। गाय के मर जाने पर उसका चर्म भी हमारे पैरों आदि की रक्षा करता है। गोचर्म के भी अनेक उपयोग हैं,

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Be not the critic but get in to the game

Neela Sood

Most of us spend a good deal of our time in perfecting the art of being a critic. The best manifestation of this behavior is in the home itself. My husband who until a year back was an avowed fan of Narender Modi, our PM, and would criticize every act of then PM Manmohan Singh, now spends most of his time writing critiques on his policies. Then, I have a very old lady living in our neighborhood. Whenever her daughter- in- law is away, I get an invite to join her over a cup of tea. But this offer of tea proves to be a nettlesome since she non stop gives a vent to her bottled up feelings and the impeached, not difficult to guess, is her daughter in law.

My second daughter does not forget to say a few unkind words against her boss, as a ritual, at least once in a week. In the last five years, she has not spared any of her three different bosses. She looks to be writing a thesis 'Boss is always wrong and inhuman', coolly forgetting that she is also a boss. I remember when my daughters were students; evening chat would involve passing comments about the looks, dress and other postures of teachers, sometimes with deep sarcasm.

Today when the coaching for any degree/ profession has become costlier than the professional fee for the course, our social media gives free coaching in the development of this skill, if one goes by the most commonly shown programmes on our TV channels, *'Charcha'* or debate involving one anchor and four critics. Quite often they ruthlessly tarnish the reputation and good will of even those who put in the hard work, sweat it out to give their best for others. For example, despite knowing well that our PM Modi does not retain the gifts he receives and auctions them to raise funds for woman education; still his expensive suit was made the issue. Commonsense says costlier the gift better it is. We seem to take pleasure in public disgrace of others. Condemnation and faultfinding have become a national pastime.

But, we forget that this zeal often blurs our capacity to see the things rationally and dispassionately. With eyes trained on indiscretions, we ignore achievements and recognition. They say, critical eye knows no limit .It is very easy for people to be critical, but very difficult to come up with constructive alternatives.

Is criticism really good? Not necessarily if one goes by Theodore Roosevelt who said, “It is not the critic who counts or not the man who points out how the strong man stumbled. The credit belongs to the man who is actually in the arena, whose face is marred by dust and sweat and blood, who strives valiantly; who values great devotion and is ready to finish himself for a worthy cause; Who knows that even if he fails, his place shall never be with those timid souls who know neither victory nor defeat.” Abraham Lincoln opined: 'He has the right to criticize who has the heart to help'

John C Maxwell has a lesson for such critics in his book, 'Your Bridge to a better future,' when he writes, “Don't stand on the side-lines of life criticizing the performance of others, Get into the game.”

*****

सम्पादकिय

आर्य समाज का स्थापना दिवस

143 साल बाद क्या करना होगा ?

आर्य समाज कोई भक्ति अंदोलन का हिस्सा नहीं था। आर्य समाज की पहचान एक क्रांतीकारी संस्था के रूप में हुई थी जिसने की सोई हुई हिन्दु जाति को जगाया, इस में फैले हुये रूढ़ीबाद, अन्धविश्वास और इन से पैदा हुई समाजिक बुराईयों को, जिसने की देश और हिन्दु जाति को एक हजार साल से भी अधिक गुलाम बनाये रखा, दूर करने के लिये साहसिक कदम उठाने की पहल की और यह सब करने के लिये इसके संस्थापक स्वामी दयानन्द ने वेदों को आधार बनाया था। इसी लिये उन्हें योद्धा सन्यासी कहा गया क्योंकि वह मठ बना कर, चेलों की भीड़ इकठठी करने दान दक्षिणा इकठे करने वाले नहीं थे। वह शायद पहले सन्यासी थे जिन्होने न तो कोई मठ बनाया, न धन छोड़ा और न ही चेला मनोनीत किया।

भवननदी उत्साहित युवा वर्ग Vibrant समाज की निशानी

वेदों की बात तो दूसरे बहुत सारे हिन्दु पण्डित भी करते थे, पर जिस रूप में वे वेदों को मानते थे और जो वेदों का अर्थ वे लोगों के सामने रखते थे वह स्वामी दयानन्द के अर्थ से बिल्कुल उल्टा था और यही सब कुछ समाज को रूढ़ीवाद और अन्धविश्वास की और लिये जा रहा था। उदाहरण के लिये वे कहते थे कि वेदों में स्त्री के लिये शिक्षा का कोई प्रवधान नहीं जब कि स्वामी दयानन्द ने अपने अर्थो द्वारा प्रमाणित कर दिया कि वेदों में शिक्षा की बात सभी के लिये कही है चाहे स्त्री है या शुद्र।

जब स्वामी दयानन्द ने सुधारों का बीड़ा उठाया उस समय हिन्दु जाति न केवल गुलाम थी पर लम्बी दास्ता के बाद इसकी हालत उस कैदी की तरह हो गई थी जो 30 साल जेल में काटने के बाद, वहां से जाना ही नहीं चाहता क्योंकि उस जेल ही अच्छी लगने लगती है। इसका सारा श्रेय आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयान्नद सरस्वती को जाता है, जिन्होने अपनी जान की परवाह किये बिना, हिन्दु पण्डितों से शास्त्रार्थ किये और सत्य को सामने रखा, और सोई हुई हिन्दु जाति को बताया की सम्मान के साथ जीना क्या होता है, और सम्मान के साथ जीने के लिये क्या करना होगा। आज आप स्त्रीयों और दलितों को सम्मान का स्थान देने की बात करते है तो कोई खास बात नहीं परन्तु 150 साल पहले यह बात करना सचमुच एक क्रातीं की बात थी जो कि स्वामी दयानंद ने की।

Yagya of 500 quintals of wood to 'curb pollution'

Ishita.Bhatia@timesgroup.com

Meerut: Nearly 350 Brahmins from Varanasi gathered at Bhainsali ground in Meerut city on Sunday to begin a nine-day-long "mahayagya" in which they will burn 500 quintals of mango wood to "reduce pollution". This rather strange event, organised by members of Shri Ayutchandi Mahayagya Samiti here, has 108 hawan kunds in a 125x125 sq ft yagyashala.

350 Brahmins holding a nine-day mahayagya in Meerut on Sunday

परन्तु यह भी सत्य है समाजिक परिस्थितियां एक सी नहीं रहती , जो परिस्थितियां स्वामी दयानन्द के समय में थी वे आज नहीं है। इस लिये समस्याओं का निदान भी एक जैसा नहीं हो सकता। यही नहीं उस समय भारत गुलाम था, अंग्रेजों की हकुमत थी। अंग्रेजी शासक वोटों के पीछे नहीं घूमते थे, न ही बोटों की राजनिती करने की उनको आवश्यकता थी । वे प्रगतीशील बातों को प्रोत्साहित करते थे। इसी कारण स्वामी दयान्नद के कार्यों को आगे ले जाने में कोई अड़िंगे नही डाले, ।

जब कि भारत आज ऐक स्वतन्त्र लोकतन्त्र है, आजाद हुये 70 साल हो चुके हैं पर इस में कोई दो राये नहीं कि दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हिन्दुओं की हालत सुधरने की बजाये बिगड़ी ही है ,

1अन्धविश्वास और पाखण्ड बढ़ रहे है

2हिन्दु धर्म में नये मत आगे से आगे बन रहें है परन्तु जो बात सब से खतरे की है वह है कि बहुत से मत हिन्दु धर्म से

अलग होने की बात कर रहें हैं ।

स्वामी दयानन्द के जीवन की दो महत्वपूर्ण घटनायें हैं। नेपाल से जुड़े बिहार के एक गांव म एक व्यक्ती भैंस का श्रंगार कर ले जा रहा था। स्वामी जी ने उत्सुक हो कर पूछा–––इस भैंस का श्रंगार कर कहां ले जा रहे हो? जवाब मिला पुत्र प्राप्ती के लिये इस की बलि दूंगा। स्वामी जी ने फिर पूछा –––ऐसा किसने कहा कि बलि देने से पुत्र प्राप्त होता है। तुरन्त जवाब मिला–––वेदों में लिखा है। स्वामी जी ने कहा––मुझे बताओ वेदों में कहां लिखा है। वह वयक्ति स्वामी जी को अपने गुरू के पास ले गया, जिसने वेद पढना तो दूर की बात है, देखे तक नहीं थे।

आज भी यही सब कुछ हो रहा ह। हर कोई वेदों को मानने की बात करता है ं और वेद के नाम पर ही सब अन्धविश्वास और पाखण्ड फैलाये जा रहे है। परन्तु क्या आज के हमारे इन आर्य समाज के प्रचारकों में यह साहस है कि उन से पूछें कि बताओं यह सब वेदों में कहां लिखा है? अगर नही ंतो उस प्रचार का कोई फायदा नहीं। 20––30 आर्य समाजियों के सामने वही सौ साल पुरानी बातें दौहराने से न ही आर्य समाज का प्रचार होता है और न ही आर्य समाज जीवित रह सकता है। यदि समय के साथ प्रासंगिक बात की जायेगी तो हमारे युवक युवतिया स्वयं चले आयेंगे । आर्य समाज तो क्रांतीकारी विचार और अन्याय के साथ लड़ाई के लिये जाना जाता था, यह हवन संधयाऐं और हवन तो दूसरे बहुत सारे भी कर रहे है और हमारे से अच्छे करते है। **स्लंगन फोटो को देखें ।** महात्मा बुद्ध ने भी यह कहा था कि ऐसे वेदों को मैं नहीं मानता, यदि उस समय उनकी बातो का समाधान करने वाला दयानंद होता ता शायद बोद्ध धर्म न बनता।

अब मैं अपका ध्यान दिलाता हूं स्वामी जी के जीवन से जुड़ी एक और घटना से। उन्होने सर्व धर्म सभा व धर्म संसद का विचार दिया और इस के लिये प्रयत्न किया और बहुत हद तक दूसरे धर्मो के धर्म गुरू मान भी गये थें । पर किसी रूकावट की वजह से यह नहीं हो सका। मेरा मानना है कि ऐसी सर्व मत सभा और वार्तालाप की आवश्यकता आज हिन्दुओं के बिभिन्न मतों में बहुत आवश्यक है। यह विचार किया जाये

हिन्दु है कौन, हिन्दुओं के लिये ईश्वर का रूप क्या है, हिन्दुओं की पूजा पद्धित क्या हो, क्या इनकी धार्मिक पुस्तकें हैं कौन मान्यपुरूष और देवता है। वेदों का असली रू॰ क्या है? बहुत से कहते हैं वेदों में पशुओं की बली का प्रवधान है, कुछ यहां तक कहते हैं कि मांस खाने पर कोई रो क नहीं, एसे में यह तय करना आवश्यक हे कि वेदों का असली रूपक्या है, गलत रूप में मानने से तो न मानना ही अच्छा है। क्योंकि गलत ढंग से मानने वाले तो वेदों को बदनाम करते है। क्या वर्जित है क्या नहीं, जाति प्रथा हो या न हो । अगर हो तो किस रूप में हो। स्त्री का स्थान, वेद का कौन सा रूप माना जाये ।इन सब बातों की चर्चा हिन्दुओं के लिये बहुत आवश्यक हो गइ्र है। आर्य समाज इस में पहल कर सकता है, परन्तु उसके लिये संकल्प चाहिये।

हमें अग्रेजों का बहुत धन्यवादी होना चाहिये कि वे हमें एक संघठित देश सौंप गये जहा हिन्दु शासन कर रहा है, वरना अंग्रेजो के आने से पहले हम थे क्या? हजारों रियासते थी जो आपस में ही लड़ते रहते थे और परिणाम स्वरूप बाहर से आये गिनती के कुछ मुगल हम पर राज करते रहे, शोषण करते रहे और हमें मुसलमान बनाते रहे। पर यह शासन तभी तक है, यह भारत देश तभी तक है, जब तक हिन्दु बहुसंख्या में है। यदि हमने अलग अलग मत बनने दिये और हिन्दु धर्म से अलग होने की छूट दे दी तो वही दिन बापिस आ जायेंगे जो कि अंग्रेजो के आने से पहले थे।

हम अंग्रेजो पर यह ईलजाम लगाते है कि उन्होने हमें तोड़ा और शासन किया पर सच्चाई यह है कि आज हमारे राजनेता चाहे कांग्रेस है या फिर भाजपा, अपनी वोटों के लिये तोड़ने में लगें है। कर्नाटक में एक करोड़ लिंगायत को हिन्दु धर्म से अलग धर्म का दर्जा देने की बात हम सब के सामने है। दुख तो इस बात का है कि हमारे आर्य समाजों में भजन संध्याऐं करने पर होड़ लगी है परन्तु कही भी इस पर विचार नहीं हुआ। आज इन भजनिको का हमारे आर्य समाजों पर ऐसा रंग छाया हुआ है कि उपदेशक शो पीस बन कर रह गया है, ऐसे में विचार आयें कहां से। ताड़ियां बजाआं, अभिन्नदन करो और करवाओ, (you scratch my back I will scratch yours) लंगर खाओं और अगली भजन संध्या की सूचना लेकर घर आओ। पर आर्य समाज में ऐसा नहीं था। उपदेशकों को सुनने सेंकड़ो हजारों में आते थे और उन के विचार लोगों के सोचने का ढंग बदल देते थे।

*****

Indefatigability is the root of success.

Arvind Sharma

Days and nights are long;
My beak is strong as iron.
Indefatigability is the root of success.
Why will the ocean not dry up?

This story pertains to the period in the Ramayana, after the abduction of Sita during excile and Rama and Lakshmana go out in search of Sita and encounter Hanuman.

Rama promises to help Hanuman's master Sugriva regain his lost kingdom and wife, and Hanuman promises to help them find Sita. Once Rama succeeds in fulfilling his part of the bargain, Hanuman sets out to find Sita in the south of India. By now the needle of suspicion was pointing strongly in the direction of Ravana because when Ravana abducted Sita and was carrying her off in his aerial car, he was spotted by an old vulture Jattau who, having taken note of Ravana's evil intent, challenged him to a fight. The vulture, unable to deter Ravana, lay fatally wounded on the ground when Rama and Lakshmana arrived on the scene. Before they performed his final rites, the dying vulture disclosed to them that a demon had carried her away in a southerly direction towards Lanka.

Hanuman's first search for Sita ends in failure. The Sanskrit epic depicts him in a crestfallen mood on the island, reflecting on what to do next. Hanuman, disheartened by failure, is now standing on the shore of the ocean and reasons that perhaps it is best for him to commit suicide. He thinks as follows: if I go back without locating Sita and tell Rama that I have not succeeded in finding her, he will die from the shock. If he dies, Lakshmana too will die from the shock of Rama's death. With Rama and Lakshmana dead, his own master, Sugriva, will die from the shock of their deaths. And if all of them die in this way then I will die from the shock of the death of my master. So perhaps it is best to abbreviate the whole process and commit suicide right now.

While he was contemplating suicide, his attention was diverted by the activity of a small bird, which seemed to dive from the sky, collect the water of the ocean in her beak, and fly away. The frequent repetition of this act by the little bird aroused his curiosity and he asked the bird what it was up to. The bird replied: "My nest has fallen into the ocean and I am trying to dry up the ocean to recover it." Hanuman was taken aback by the resolve of the little bird, and asked, full of surprise, how she hoped to empty the ocean to recover her nest (in the face of the obvious mismatch between her and the ocean). Thereupon the bird replied:

Days and nights are long;
My beak is strong as iron.
Indefatigability is the root of success.
Why will the ocean not dry up?

Hanuman was astounded by the determination of the little bird and thought to himself: if this little bird can display such courage and determination then surely I should not give up on my goal and at least make one more attempt to find Sita.

Hanuman did, indeed, succeed in his mission the second time. The little verse uttered by the little bird in the epic which so inspired Hanuman has become a famous saying and its message – "Give up giving up" – has perhaps inspired many more, just as it inspired Hanuman.

*****

नम्रता मनुष्य का आभूषण है।

लेने को हरिनाम है, देने को कुछ दान।
तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान।।

नम्रता मनुष्य का आभूषण है। जो लोग अकड़े रहते हैं हर समय, उनकी एक–न–एक दिन गर्दन टूटती है जरूर। तेज तूफानी आँधी चल रही हो तो बड़े–बड़े वृक्ष चरमराकर टूट जाते हैं। परन्तु छोटे–छोटे पौधे, घास के तिनके बच जाते हैं। इसलिए कि उनमें नम्रता है। तीव्र झोंके आते हैं तो वे झुक जाते हैं। उनके समाप्त होते ही फिर खड़े हो जाते हैं। अकड़ने वाले समाप्त होते हैं झुकनेवाले नहीं। रावण अकड़ा, उसकी गर्दन कट गई। औरंगज़ेब अकड़ा, उसकी आँखों के सामने उसका साम्राज्य तहस–नहस होने लगा। हिटलर अकड़ा तो उसका भी यही हाल हुआ।

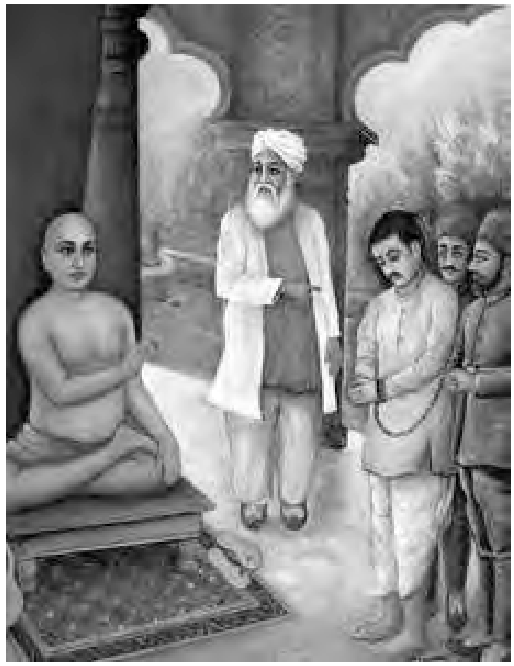

गीता में भगवान् कृष्ण ने देवताओं और राक्षसों को 'दैवी' और 'आसुरी' सम्पदा के लक्षण अर्जुन को बताए तो दैवी सम्पदा के सम्बन्ध में कहा–

तेजः क्षमा धृतिः शैचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।

'हे अर्जुन! सुन मैं तुझे बताता हूँ कि जिन लोगों में 'दैवी सम्पदा' है, देवताओं जैसे गुण हैं, उनमें क्या दिखाई देता है। सबसे पहले तेज, मुखमण्डल पर खेलता हुआ एक तेज जो दूसरों को हिप्नोटाइज ;वशीभूतद्ध कर लेता है, उन्हें अपनी ओर खेंचता है, बिना कुछ कहे ही उनके मन में अपने लिए प्रतिष्ठा और प्यार पैदा कर देता है।

सोमं राजानं वरूणमग्निमन्बारभामहे।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्मण च बृहस्पतिम्।।

इस मन्त्र का सबसे प्रथम शब्द 'सोम' है, परन्तु 'सोम' का अर्थ क्या है? मनुष्य एक यात्री है। वह पैदा होता है तो अपने जीवन की यात्रा आरम्भ करता है। कई मञ्जिज़लों, कई दिशाओं, कई निर्ज़न वनों, कई हरे भरे मैदानों, कई गर्जती नदियों, कई सुनसान रेगिस्तानों, कई पहाड़ों, कई नगरों–ग्रामों से गुजरता है। कहीं बाजे बज रहे हैं, कहीं चीखें गूँज रही हैं, कहीं मुस्कराहटें हैं, कहीं आँसू। कभी कभी खुशी के फूल खिल उठते हैं। कभी चिन्ता के बादल उमड़ आते हैं। कहीं प्यार है, कहीं घृणा कहीं मित्रता, कहीं शत्रुता कहीं मान, कहीं अपमान कहीं चहचहाते पक्षी, कहीं हिंसक पशु। ऐसी है यह दुनिया। कहीं सफलता की फूल–मालाएँ, कहीं असफलता के काँटों का ताज। इस यात्रा में मनुष्य आगे सोमं अनु आरभामहे। सोम के साथ अपने जीवन का आरम्भ करके। 'सोम' को संस्कृत में कहते हैं 'सौम्यता' का अर्थ है नम्रता, शीलता, मधुरता मीठा बोलना, पवित्र व्यवहार, मीठा स्वभाव, भगवान के लिए प्रेमभक्ति। ये सब–के–सब 'सोम' हैं। इनसे जो आनन्द मनुष्य को मिलता है उसी को 'सोम रस' कहते हैं।

शत्रु से सहानुभूती केवल महान आत्माये हीं कर सकती है

आम व्यक्ति अपने मित्रों, रिश्तेदारों और शुभचिन्तको के साथ तो सहानुभूती कर सकता है पर जो अपने शत्रुओं से भी सहानुभूती करें और उनके अपराधों को भी माफ कर दें, ऐसी तो केवल महान आत्मायें ही होती है , जिन्होने यम नियम का पालन कर , उपासना द्वारा अपने अन्दर से बैर, द्वेश और घृणा के भाव को खत्म कर दिया होता है। खास बात यह है कि ऐसे अनोखे व्यवहार को जिस में कि व्यक्ति अपने शत्रु से भी सहानुभूती करें और उनके अपराधों को माफ कर दे, आम व्यक्ति समझ नहीं सकता। उसका मानना होता है कि ऐसे व्यक्ति के साथ सहातुभूती नहीं होनी चाहिये।

स्वामी दयान्नद के जीवन की एक घटना इस बात को बताती

*****

है। हिन्दु धर्म में फैले पाखण्डों के विरूद्ध जिस प्रकार उन्होने अपना मोर्चा खोला हुआ था, उस से पण्डित उनके शत्रु बन गये थे, और उनकी जान लेने पर उतारू हो गये थे। 17 बार उन की जान लेने का प्रयत्न किया गया। इन्ही प्रयत्नों के दौरान एक बार एक बाहम्ण आया और उन्हें प्रणाम कर पान पेश किया। जैसे ही स्वामी जी ने पान को थोड़ी देर के लिये मुंह में रखा , उन्हें समझ आ गया कि इसमें जहर है। लेकिल उस व्यक्ति से बिना कुछ कहे ही वे अन्दर गये और पान थूक दिया और गंगा स्नान के लिये चले गये।

लेकिन यह जहर देने की बात छिपी नहीं रही और उनके एक प्रशंसक तहसीलदार ने उस जहर देने वाले व्यक्ति को पकड़ कर अन्दर हवालात में डाल दियाऔर यह बात बताने के लिये स्वामी जी के पास आया। लेकिन स्वामी जी आपने काम में व्यस्त रहे और तहसीलदार की तरफ देखा तक नहीं। यह देखकर तहसीलदार को आश्चर्य हुआ और उसने स्वामी जी से नाराजगी का कारण पूछा। स्वामी जी बोले–––तुमने मेरे कारण एक व्यक्ति को कारागार मे डाल दिया, यह मुझे ठीक नहीं लगा। मैं तो लोगों को मुक्त करवाने आया हूं न कि कैद।

त्हसीलदार हैरान था, उसे क्या पता था कि महान आत्माये तो शत्रुता, बैर, मोह से कासों दूर हो गई होती है। उनके लिये शत्रु और मित्र में कोई फर्क नहीं होता। यही योगी की परिभाषा है जिसे की श्री कृष्ण ने गीता में बताया है।

म्हान आत्माओं के व्यवहार को भी वही समझ सकता है जो कि इस मार्ग का पथिक हो ।

इस सुन्दर भजन में इस बात को बताया है,
विश्वापति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन,
क्यों न हो उसको शान्ति,, क्यों न हो उस का मन मगन,
ऐसा बना स्वभाव को , चित की शान्ति से तू,
पैदा न हो ईर्ष्या की आंच, दिल में करे कहीं जलन,
मित्रता सब से मन में रख, त्याग दे वैर भाव को,
छोड दे टेढ़ी चाल को, ठीक कर अपना चलन
छोड़ दे राग द्वेष को, मन में तू उसका ध्यान कर,
तुझ पर दयालु होवेंगे, निश्चय ही परमात्मा

*****

आम व्यक्ति से कितना दूर होते हैं ये हमारे राजनेता

आप सभी जानते हैं कि श्री पी सी चिदम्बरम 2014 तक लगातार 10 साल के लिये हमारे देश के वित मन्त्री रहे। अभी हाल में वे चैनई हवाई अड़े पर थे तो उन की चाय पीने की ईच्छा हुई और वहीं अन्दर चाय के काउन्टर पर उन्होने पूछा–––चाय कितने की ? जवाब मिला –––135 रूपये की। चिदम्बरम साहब कीमत सुन कर हैरान परेशान थे। अरे इतनी मंहगी ! कौन पीता है इतनी मंहगी चाये। जवाब मिला सभी पीते हैं। आप देख सकते । अच्छा काफी कितने की है?

जवाब मिला –––135 रूपये की। हैरान परेशान चिदम्बरम साहब ने कहा–––अरे हम को नहीं पीनी इतनी महंगी चाय काफी। चिदम्बरम साहब ने इस घटना की टविटर कर दिया। शाम को जवाब आया––– चिदम्बरम साहब ऐसा लगता है कि या तो पैसे खर्च कर आप पहली बार चाय पीने लगे थे या फिर आम व्यक्ति से ही आप बिन्कुल असग रहते हो क्योंकि चैनई हवाई अडडे पर पिछले 10 साल से चाय काफी की यही कीमत चल रही है। यह सिर्फ चिदम्बरम साहब की ही बात नहीं सभी राजनितिज्ञों का यही हाल है।

*****

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म्।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Gurpreet Singh Kang celebrating her daughter's birthday with slum children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Mrs and Mr Navneet

Pratima Khurana

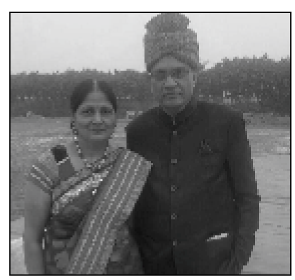

Raj Kumari

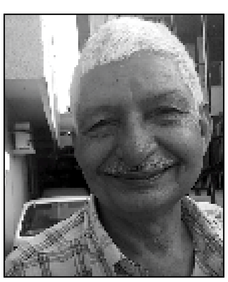

Mrs and Mr Navneet

Vidur S/o Vishavbandhu

Vinod Bala

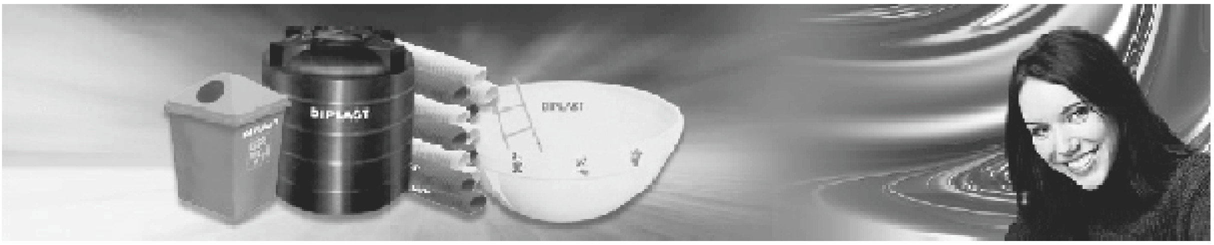

मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in